जिस्म की जरूरत-3

“रैक के ऊपर के सारे बर्तन गंदे पड़े थे इसलिए वो झुक गईं और नीचे की तरफ ढूंढने लगीं। ‘उफ्फ्फफ़...’ बस इसी की कमी थी। रेणुका जी ठीक मेरे सामने...

[Continue Reading] ...”

Story By: sameer chaudhary (sameer_chaudhary)
Posted: Monday, October 13th, 2014
Categories: पड़ोसी
Online version: जिस्म की जरूरत-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

जिस्म की जरूरत-3

रैक के ऊपर के सारे बर्तन गंदे पड़े थे इसलिए वो झुक गईं और नीचे की तरफ ढूंढने लगीं।

‘उफ्फ्फ़…’ बस इसी की कमी थी।

रेणुका जी ठीक मेरे सामने इस तरह झुकी थीं मनो अपनी गोल गोल और विशाल चूतड़ों को मेरी तरफ दिखा दिखा कर मुझे चोदने का निमंत्रण दे रहीं हों।

अब मुझ जैसा लड़का जिसने दिल्ली की कई लड़कियों और औरतों को इसी मुद्रा में रात रात भर चोद चुका हो उसकी हालत क्या हो रही होगी, यह तो आप समझ ही सकते हैं।
ऊपर से चूत के दर्शन किये हुए तीन महीने हो गए थे।
मेरा हाल यह था कि मेरा लंड अब मेरे बरमुडे की दीवार को तोड़ने के लिए तड़प रहा था और मैं यह फैसला नहीं कर पा रहा था कि क्या करूँ… अभी बस कल रात को ही तो हमारी मुलाकात हुई है और वो भी बड़ी शालीनता भरी। तो क्या मैं इतनी जल्दी मचा कर आखिरी मंजिल तक पहुँच जाऊँ या अभी थोड़ा सा सब्र कर लूँ और पूरी तरह से यकीन हो जाने पर कि उनके मन में भी कुछ है, तभी आगे बढ़ूँ…

सच कहूँ तो दिल्ली की बात कुछ और थी… वहाँ इतनी झिझक न तो मर्द की तरफ से होती है और न ही औरत की तरफ से… कम से कम मुझे जितनी भी चूतें हासिल हुई थीं वो सब बेझिझक मेरे लंड को अपने अन्दर ठूंस कर चुदवाने का ग्रीन सिग्नल पहली मुलाकात में ही दे देती थीं…

लेकिन यहाँ बात कुछ और थी। एक तो यह छोटा सा शहर था और यहाँ के लोगों को मैं ठीक से समझ भी नहीं पाया था… इसलिए इस बात का डर था कि अगर पासा उल्टा पड़

गया तो लेने के देने पड़ जायेंगे।

इसी उधेड़बुन में अपना लंड खड़ा किये मैं रेणुका जी को अपनी गांड मटकाते हुए देखता रहा और धीरे से उनके पीछे से हट कर बगल में आ गया और खुद भी झुक कर उनकी मदद करने लगा।

ऐसा करने की एक वजह ये थी कि अगर मैं पीछे से न हटता तो पक्का कुछ गड़बड़ हो जाती… और दूसरा यह कि मुझे यह एहसास था की रेणुका के झुकने से उसकी चूचियों की हल्की सी झलक मुझे दिखाई पड़ सकती थी।

दिल में चोर लिए मैं उनसे थोड़ा नज़दीक होकर अपने हाथ बढ़ा कर बर्तन ढूंढने का नाटक करने लगा और जान बुझ कर उनके हाथों से अपने हाथ टकरा दिए।

अचानक हाथों के टकराने से उन्होंने थोड़ा सा घूम कर मेरी आँखों में देखा और यूँ ही झुकी हुई मुझे देखते हुए अपने हाथ चलाती रही बर्तनों की तरफ।
उनके जरा सा घूमते ही मैं खुश हो गया और उनके आँखों में देखने के बाद अचानक से नीचे उनके गाउन के खुले हुए गले पे अपनी नज़र ले गया।

उफ्फ्फ्फ़… गाउन का गला उनके झुकने से थोड़ा सा खुल गया था और उनकी बला की खूबसूरत गोरी चूचियों के बीच की लकीर मेरे ठीक सामने थी।
बयाँ नहीं कर सकता कि उन दो खूबसूरत चूचियों की वो झलक अपने अन्दर कितना नशा समेटे हुए थी।
उनकी चूचियाँ अपनी पूरी गोलियों को कायदे से सँभालते हुए गाउन में यूँ लटकी हुई थीं मानो दो खरबूजे… उन लकीरों ने मुझे यह सोचने पे मजबूर कर दिया कि गाउन के अन्दर उन्होंने ब्रा पहनी भी है या नहीं।

कुछ आधा दर्ज़न चूचियों का रसपान करने के मेरे तजुर्बे ने यह बताया कि उन चूचियों के ऊपर गाउन के अलावा और कुछ भी नहीं, तभी वो इतने स्वंतंत्र भाव से लटक कर अपनी सुन्दरता को नुमाया कर रही थी।

कहते हैं कि औरतों को ऊपर वाले ने यह गुण दिया है कि वो झट से यह समझ जाएँ कि सामने वाली की नज़र अच्छी है या गन्दी…

मेरी नज़रों का निशाना अपनी चूचियों की तरफ देखते ही भाभी के गाल अचानक से लाल हो गए और वो शरमा कर खड़ी हो गईं।

मैं भी हड़बड़ा कर खड़ा हो गया और हम दोनों एक दूसरे से नज़रें चुराते हुए चुपचाप खड़े ही रहें… मानो हम दोनों की कोई चोरी पकड़ी गई हो!
'समीर जी, आप ऐसा करें कि फिलहाल मेरे दूध का बर्तन रख लें मैं बाद में आपसे ले लूंगी…' भाभी ने अपने शर्म से भरे लाल-लाल गालों को और भी लाल करते हुए मेरी तरफ देख कर कहा और कुछ पल के लिए वैसे ही देखती रहीं..

मैं कमीना, जैसे ही भाभी ने दूध का बर्तन कहा, मेरी नज़र फिर से उनकी चूचियों पर चली गईं जो तेज़ तेज़ साँसों के साथ ऊपर नीचे होकर थरथरा रही थीं…

अचानक मेरी नज़रें उनकी गोलाइयों के साथ घूमते घूमते चूचियों के ठीक बीच में ठहर गईं जहाँ दो किशमिश के दानों के आकार वाले उभार मेरे तजुर्बे को सही ठहरा रही थीं…
यानि रेणुका भाभी ने सचमुच अन्दर ब्रा नहीं पहनी थी।

इस बात का एहसास होते ही उनकी चूचियों के दानों को एकटक निहारते हुए मैंने एक लम्बी सांस भरी…

मेरी साँसों की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि भाभी का ध्यान मेरे चेहरे से हट गया और उनकी

आँखें नीचे झुक गईं…

यहाँ भी बवाल… नीचे हमारे लंड महाराज बाकी की कहानी बयाँ कर रहे थे।

अब तो रेणुका का चेहरा सुर्ख लाल हो गया… एक दो सेकंड तक उनकी निगाहें मेरे लंड पे टिकीं, फिर झट से उन्होंने नज़रें हटा लीं।

‘अब मुझे जाना चाहिए… आप को भी दफ्तर जाना होगा और वन्दना भी कॉलेज जाने वाली है…’ रेणुका जी ने कांपते शब्दों के साथ बस इतना कहा और शर्मीली मुस्कान के साथ मुड़ कर वापस चल दीं।

उनके चेहरे की मुस्कान ने मेरे दिल पे हज़ार छुरियाँ चला दी… मैं कुछ बोल ही नहीं पाया और बस उन्हें पीछे से देखने लगा अपनी आँखें फाड़े फाड़े !

हे भगवन… एक और इशारा जिसने मुझे पागल ही कर दिया… उनका गाउन पीछे से उनकी चूतड़ों के बीच फंस गया था… यानि…
उफ्फ… यानि की उन्होंने उस गाउन के अन्दर न तो ब्रा पहनी थी और ना ही नीचे कोई पैंटी-कच्छी… !!

मेरा हाथ खुद-ब-खुद अपने लंड के ऊपर चला गया और मैंने अपने लंड को मसलना शुरू कर दिया।

रेणुका तेज़ क़दमों के साथ दरवाज़े से बाहर चली गईं…
मैं उनके पीछे पीछे दरवाज़े तक आया और उन्हें अपने खुद के घर में घुसने तक देखता ही रहा।

मैं झट से अपने घर में घुसा और बाथरूम में जाकर अपन लंड निकाल कर मुठ मारने

लगा।
बस थोड़ी ही देर में लंड ने ढेर सारा माल बाहर उगल दिया…
मेरा बदन अचानक से एकदम ढीला पड़ गया और मैंने चैन की सांस ली।

मैं बहुत ही तरो ताज़ा महसूस करने लगा और फटाफट तैयार होकर अपने ऑफिस को चल दिया।
कहानी जारी रहेगी।